DOI: 10.51220/hjssh.v10i1.9

Himalayan J. Soc Sci.& Humanities (ISSN-0975-9891): 2015, Vol 10, pp 85-88

प्रकृति और हिमवंत कवि चन्द्र कुँवर बर्त्वाल

डॉ गुड्डी बिष्ट पंवार

हिन्दी हे0न0ब0ग0के0विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल।

Received : 15.11.2015

Accepted: 28.12.2015

ABSTRACT

प्रकृति और मानव का सदैव अटूट सम्बन्ध रहा है, जब मानव ने धरती पर जन्म लिया, तो आँख खोलते ही प्रकृति का साक्षात्कार किया। प्रारम्भ से ही प्रकृति अपनी ममतामयी रूप में मानव को धारण करती है और उसका पोषण करती आई है। प्रकृति के उपर्युकत रूप में रचा–बसा कविवर चन्द्रकुँवर बर्त्वाल का जन्म जनपद चमोली में हुआ। प्राकृतिक सौन्दर्य चन्द्रकुँवर की कविताओं में स्वाभिविक रूप से रचा बसा है। बर्त्वाल जी को प्रकृति से अति प्रेम था। चन्द्रकुँवर के काव्य और उनके व्यक्तिगत जीवन की घटनाओं में भी घनिष्ठ सम्बन्ध है।

KEYWORDS:- प्रकृति, संस्कृति, पयस्विनी, प्राकृतिक सौन्दर्य, हिमालय।

प्रकृति और मानव का सदैव अटूट सम्बन्ध रहा है जब मानव ने धरती पर जन्म लिया, तो आँख खोलते ही प्रकृति का साक्षात्कार किया। अपने विविध रूपों में प्रकृति मानव की संगिनी, उपदेशिका और सहचरी बनकर सामने आई। पं0 गंगाप्रसाद पाण्डेय लिखते है कि "प्रकृति मानव की चिरसंगिनी है, आदि मानव के धरती पर पाँव रखते ही प्रकृति रानी ने अपने अंचल की छाया उस पर कर दी होगी। किलकारी मारता दौड़ता हुआ मानव जिधर भी पहुँच जाता होगा प्रकृति अपनी दोनों बाँहें खोले उसके स्वागतार्थ खड़ी मिलती होगी। प्रारम्भ से ही प्रकृति अपनी ममतामयी रूप में मानव को धारण करती है और उसका पोषण करती आई है। निर्झरों का कल–कल शब्द संगीत सुनना, नक्षत्रगण गुपचुप कहानियाँ कहते हैं। कलिका चुटकी बजाकर पास बुलाती है, चन्द्रिका खिलखिलाकर हंस पड़ती है, सूर्य अपनी ज्योति विकीर्ण कर देता और शीतल मंद सुगन्धित समीर नवीन स्फूर्ति का संचार कर देता है।

प्रकृति के उपर्युकत रूप में रचा–बचा कविवर चन्द्रकुँवर बर्त्वाल का जन्म 20 अगस्त सन् 1919 को जनपद चमोली गढ़वाल के पट्टी तल्ला, नागपुर के मालकोटी गाँव में हुआ था। मालाकोटी, तल्ला नागपुर तथा मन्दाकिनी घाटी का प्राकृतिक सौन्दर्य चन्द्रकुँवर की कविताओं में स्वाभिविक रूप से रचा बसा है। उनके पिता का नाम भूपाल सिंह था जो धार के ख्यात नामक जगदेव पंवार के वंशज थे और माता का नाम जानकी देवी था जो सिद्धराज जयसिंह सोलंकी से सम्बन्धित भण्डारी वंशज से सम्बन्ध रखती थी। उनके पिता ने मालकोटी से लगभग 20 किमी0 दूर भीरी के पास पाँवलिया में जमीन खरीदी और वहीं पर स्थाई रूप से रहने लगे।

© SHARAD

बर्त्वाल जी को प्रकृति से अति मोह था यही कारण रहा कि देशभर का भ्रमण करने के पश्चात् अपने ग्राम एवं संस्कृति और प्राकृतिक सौन्दर्य को व विलग न कर सके। बर्त्वाल जी का व्यक्तित्व हिमवन्त के उस भू–भाग की उपज है जिसमें चीड़, देवदार, बाँज, बुंरास की यौवनपूर्ण गन्ध और रंगबिरंगें फूलों की महक है और इसी प्रकति सौन्दर्य से रचा बसा उनका लेखन हमारी अमूल्य धरोहर हैं।

प्रकृति के साथ बर्त्वाल का सम्बन्ध सदा युवा प्रेमी सा रहा है। क्योंकि अपने युवाकाल में ही उनका लेखन चरम पर था, इससे अधिक वे जी भी न सके। प्रकृति के प्रति बर्त्वाल का प्रेम अत्यन्त स्वच्छन्द स्वाभाविक एवं वैदिक ऋषियों वाला था।

प्रकृति की गोद में बैठकर विराट हिमालय को उन्होंने अपनी कविताओं का आधार बनाया जैसा कि वे स्वयं कहते है– मेरी कविताओं का आधार स्तम्भ हिमालय होगा। हिमालय के ही दृश्य, मैं अपनी कविताओं में चित्रित करूँगा मेरे पथ प्रदर्शक कालिदास हैं, मुझे किसी का भय नही। और सचमुच निडर होकर बर्त्वाल जी ने प्रकृति का शत्–शत् सौन्दर्य निरूपण अपने काव्य में किया है वे उसके सौन्दर्य पर अभिभूत हो जाते हैं वे प्रकृति के सानिध्य में रहे हैं वे वास्तविक अर्थों में सरस्वती के वदर पुत्र और कविता के सागर थे।

बर्त्वाल जी ने अपने काव्य में प्रकृति का वर्णन मानव व्यापारों की पृष्ठभूमि के रूप में किया ह। उन्होंने अपनी कविताओं में आरम्भ से ही प्रकृति का पृष्ठभूमि के रूप में चित्रण किया हैं। उन्होंने सौन्दर्य, उमंग, उल्लास, प्रेम यौवन विरह, बासन्ती वर्षा, मधुरित संध्या, अन्धकार आदि के वातावरण तैयार किए हैं।

चन्द्रकुँवर के काव्य और उनके व्यक्तिगत जीवन की घटनाओं में घनिष्ठ सम्बन्ध है। उनकी अधिकांश कविताएँ उनके जीवन की घटनाओं एवं स्थितियों को व्यक्त करती हैं। 'पयस्विनी' में 'पाँवलिया' शीर्षक से लिखी कविता इसी भाव की है। जिसमें कवि ने अपने जीवन के आरम्भिक क्षणों को व्यतीत किया है। इस प्राकृतिक सौन्दर्य के बीच में वे अपने दुःख–दर्द को विस्मत कर बैठे। उनके जीवन में नवीनता का संचार हुआ और उन्हें ऐसा महसूस होने लगा था जैसे इस पृथ्वी का जन्म अभी हुआ, तो वह इतनी जल्दी कैसे समाप्त हो सकती है क्योंकि नवीनता हमेशा समय की मांग करती है और इसी भाव को कवि ने अपने घर के सौन्दर्यपूर्ण वातावरण के साथ निम्न शब्दों में व्यक्त किया–

"मेरा गृह है, जहाँ बच्चियों सी हंस–हंस कर
नाच–नाच बहती हैं छोटी–छोटी नदिया।
जिन्हें देखकर जिनकी मीठी ध्वनियाँ सुनकर,
अभी–अभी आयी है, इसमें तो चिन्ता को
और मरण को स्थान अभी कैसे हो सकता!"[1]

प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन अपनी तूलिका से करना छायावादी कवियों की प्रमुख विशेषता रही है। छायावादी कवि प्रकृति के सौन्दर्य पर अपना हृदय हार बैठे हैं। उन्होंने प्रकृति के अनेक सुन्दर एवं मनोहरी चित्र अंकित किये हैं। छायावादी कवियों की भाँति बर्त्वाल भी प्रकृति के कवि थे। उन्होंने

© SHARAD

प्रकृति के अनुपम एवं अनूठे दृश्यों को जीवन्त बनाकर प्रस्तुत किया है। बसन्तागमन के समय पृथ्वी पर सौन्दर्य का जो वातावरण छा जाता है, उसका वर्णन कवि ने निम्न पंक्तियों में किया है—

"जब वसन्त आता है,
वसुधा वक्षस्थल आन्दोलित हो जाता है।
मिट जाता युग—युग का दुःख, भय,
मन भर आता है,
जब वसन्त आता है।"[2]

कविवर बर्त्वाल ने वातावरण का निर्माण करने वाली प्रकृति का चित्रण बहुत ही सूक्ष्मता के साथ किया है। यह चित्रण कवि द्वारा इस प्रकार किया गया है कि उसके द्वारा अनायास ही आने वाली गम्भीरता, उमंग, उल्लास एवं खुशी का ज्ञान काव्य रसिकों को होने लगता है। जैसे—सूर्य की नवकिरणों का धरती पर आना, किसी युवती का गगरी लेकर दूर तालाब के किनारे सुनसान मार्ग से पानी भरने जाना आदि चित्रणों से शान्त निर्जन प्रदेश के प्रातः कालीन वातावरण एवं एक ग्रामीण परिवेश का चित्र उभरकर सामने आ जाता है—

"आती थी जब वन में रवि की नव किरणें,
सिर पर अपनी गगरी लेकर
वन में निर्जन पथ से चलकर
आती थी मैं जल के तट पर जल भरने।"[3]

पुनः उमंग और उल्लास का वातावरण तैयार करने के उद्देश्य से बसन्त के आगमन का प्रथम दिवस, धरती प्रेम से भरी हो, रास्तों पर फूल झड़ रहे हों, चारों तरफ हरीतिया के मध्य गायों का चरना और ग्वालों की बाँसुरी की सुरीली मीठी ध्वनि करते हुए प्रदर्शित किया गया है—

"प्रथम दिवस के नव वसन्त के, धरा प्रेम से भरी हुई,
छाया भरे पथों में पुष्पों की पंखुरिया झरी हुई,
हरे—भरे शिखरों पर चरती थी, नव गर्भवती गौएँ,
छोड़ रहा था तान सुरीली ग्वाला झूम बाँसुरी की।"[4]

सुन्दर नीरव प्रकृति एवं स्निग्ध शन्ति से युक्त बर्त्वाल का काव्य मंदाकिनी के कुँजों में कोमल ज्योत्सना की तरह छिटका हुआ है। प्रभात होने पर अंशुमाली की प्रथम किरण का जल में गिरना तथा इन किरणों के स्पर्श से फूलों का खिलना आदि कवि के मन को मुग्ध कर लेता है। कवि के लिए प्रभात का अत्यधिक महत्व है। सम्पूर्ण सृष्टि के क्रिया कलाप प्रभात के आने से ही संचालित होते हैं। जिस प्रकार रजनी के बीतने से प्रभात का आगमन है उसी तरह मानव हृदय में भी नवीन आचार विचार एवं आशाओं का जन्म होता है। जब प्रभात समाप्त होता है तभी अनन्त दीपों के साथ रात्रि का आगमन होता है तथा पृथ्वी पर अनेक प्रकार के परिवर्तन होते है। सम्पूर्ण प्रातः कालीन क्रिया—कलाप निश्चय ही कवि के मानस पटल पर प्रभाव छोड़ते हैं—

"गौशाला के द्वार खोल, गौवों को वाहर कर,

© SHARAD

चले मधुर गाते तुम–हिम जल के भीगे वन पथ पर।"[5]

प्रातःकालीन सुन्दर चित्रों के साथ ही दोपहरी, संध्या भयानक अंधकार, सावन, वर्षा, हरियाली, हिमऋतु, आदि विभिन्न प्रकार से अपने काव्य में प्रकृति सौन्दर्य को निखारा है। बर्त्वाल जी का काव्य प्रकृति के सर्वांग रूपों का एक गुलदस्ता है। प्रकृति उनकी लेखनी में प्रत्येक जगह विद्यमान रही। शम्भूप्रसाद बहुगुणा जी लिखते हैं कि– "श्री चन्द्रकुँवर ने कभी स्नेहमयी प्रकृति को निस्प्राण अनुभव किया हो ऐसा हमें याद नहीं। माँ की वात्सल्य–शीतल गोद में लौटे हुए कवि ने सदा ही उसके समीपस्थ हृदय के स्पंदन को साफ–साफ सुना है।" चन्द्रकुँवर की कविता में हिमालय के विविध चित्र हैं। हिमालय पर लिखी इतनी अधिक कविताएँ किसी और कवि के नाम से नहीं मिलती और भावों का इतना वैविध्य अन्यत्र नहीं दिखता है। प्रकृति प्रेम की ललक उनके काव्य सृजन का मुख्य बिन्दु था। प्रकृति प्रेमी ऐसे अमर कवि को कोटि–कोटि नमन जो मात्र 28 वर्ष की उम्र में इतना कुछ साहित्य को दे गये, कि हिन्दी साहित्य ऐसे अमर कवि का हमेशा ऋणी रहेगा।

निष्कर्षतः कहा जाता सकता है कि प्रेम, प्रकृति और मानव की त्रिवेणी लेकर बर्त्वाल जी का काव्य हमेशा ही साहित्य में एक अनमोल मोती की तरह चमकता रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1– पयस्विनी– चन्द्रकुँवर बर्त्वाल, पृ0–143

2– चन्द्रकुँवर काव्य प्रसंग और काव्य संहिता – श्री कंठ, पृ0–31

3– चन्द्रकुँवर काव्य प्रसंग और काव्य संहिता – श्री कंठ, पृ0–48

4– चन्द्रकुँवर काव्य प्रसंग और काव्य संहिता – श्री कंठ, पृ0–22

5– हिमवंत का एक कवि – शम्भूप्रसाद बहुगुणा– पृ0– 186